"प्रमाणपत्र"

मै यह प्रमाणित करता हूँ, कि श्री. बलवंत भपाल सोत ने मेरे निर्देशन में "डॉ. रामगोपाल शर्मा दिनेश के पृथ्वीराज नाटक का अनुशीलन" लघु शोध प्रबंध एम. फिल. उपाधि के लिए लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। यह लघु प्रबंध पुर्ण योजना के अनुसार लिखा गया है। जो तथ्य इस लघु शोध प्रबंध में प्रस्तुत किए गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं।

कोल्हापूर

दिनांक: १६-५-८८

(डॉ. व्ही. व्ही. द्रविड)
निर्देशक.

" प्रख्यापन "

यह लघु प्रबंध मेरी मौलिक रचना है , जो एम. फिल. के लघु प्रबंध के रूपमें प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

कोल्हापुर । (बलवंत भूपाल खोत)

दिनांक : १५.४.८९

" कृतज्ञता - ज्ञापन "

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध लिखते समय मुझे अनेक मान्यवर व्यक्तियों की सहायता मिली। उन सबका मै हृदय से आभारी हूँ। सर्व प्रथम मै गुरुवर्य डॉ. व्ही. व्ही. द्रविड का अत्यंत कृतज्ञ हूँ, क्योंकि आपके बिना मार्गदर्शन से यह शोध कार्य पूरा ही न हो सकता। ज्ञान और सहकार के स्तर पर जो विशालता आपने दिखायी, उसके सामने मैं अपने को छोटा अनुभव करता हूँ।

जी. आय. बागेवाडी कला विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय निपाणी के प्राचार्य बी. एफ. पाटील तथा ग्रंथपाल आय. एस. वाली का मुझे आभारी रहना ही पडेगा, जहाँ से मुझे आलोचन ग्रंथ उपलब्ध हो सके। उसी प्रकार मेरे सहयोगी प्रा. एस. एच. कांबळे, प्रा. एल. जी. हुक्केरी पाटील तथा प्रा. पी. जी. शहा. का मै कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे इस कार्य में समय समय पर सहकार्य तथा प्रेरणा दे दी।

धन्यवाद।

श्री. बलवंत भूपाल खोत.

" आमुख "

एम. फिल. परीक्षा के लिए विशेष साहित्य विधा के रूपमें मैंने नाटक विषय चुना था। डॉ. रामगोपाल शर्मा "दिनेश" आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों में महत्वपुर्ण व्यक्ति है।

आज भारत के सामने जो समस्याएँ है, उन्हे सुलझाने के लिए भारत के इतिहास का आधार लेकर साहित्य निर्माण के द्वारा डॉ. दिनेश जी ने कुछ सुलझाव प्रस्तुत किये है।

डॉ. दिनेश जी ने "पृथ्वीराज" नाटक में पंजाब में चल रही आंतकवादियों की दुष्कृतियों तथा दिन-ब-दिन फिसलती नैतिकता को प्रस्तुत किया है , जो आतंकवाद की समस्या हल करनें में तथा नयी पीढी को सुसंस्कारित करने में सहायक हो सकती है।

मैंने जब पहली बार इस नाटक को पढा, तब मेरे मन में देश की समस्या का तथा नयी पीढी का चित्र उभर आया और मै इस नाटक के विशेष अध्ययन की ओर प्रवृत हुआ।

डॉ. दिनेश के व्यक्तित्व तथा उनके "पृथ्वीराज" नाटक पर विवेचनात्मक साहित्य बहुत कम उपलब्ध है, इससे इस विषय में अध्ययन करते समय इस प्रकार की सहायता बहुत कम मिल सकी।

प्रस्तुत विषय के अध्ययन में मेरा यह प्रयास परिपूर्ण तो नहीं है, लेकिन इससे डॉ. दिनेश के साहित्यपर और अध्ययन करनेवालों के लिए इससे प्रेरणा भी मिल जाए, तो मैं मानूंगा, कि मेरा प्रयास सफल हो गया है।

आशा है, मेरा यह प्रयास डॉ. रामगोपाल शर्मा "दिनेश" जी के "पृथ्वीराज" नाटक का सौन्दर्य अल्प रूपमें क्यो न हो, व्यक्त करने में सफल हो।

श्री बलवंत भूपाल खोत,

" डॉ॰ रामगोपाल शर्मा "दिनेश" के "पृथ्वीराज" नाटक का अनुशीलन "

१) हिन्दी नाटकों की, विशेषकर ऐतिहासिक नाटकों की विकासात्मक रूपरेखा।

२) डॉ. रामगोपाल शर्मा "दिनेश" : व्यक्तित्व और कृतित्व।

३) पृथ्वीराज नाटक :

अ) पृथ्वीराज: नाटक की ऐतिहासिकता।

आ) शिल्प की दृष्टि से नाटक का विवेचन।

इ) पात्रों का चरित्र चित्रण।

ई) नाटक का उद्देश्य।

उ) नाटक की कथावस्तु: आधुनिक परिप्रेक्ष्यमें।

ऊ) नाटक के गीत।

ए) रंगमंच की दृष्टि से "पृथ्वीराज" नाटक।
(पृथ्वीराज नाटक की रंगमंचीयता)

४) उपसंहार।

निर्देशक
डॉ. व्ही॰ व्ही. द्रविड
एम. ए॰, पी.एच्.डी.,

शोधछात्र
प्रा॰ बलवंत भूपाल खोत
एम. ए., पंडित,
साहित्य सुधाकर.

" डॉ॰ रामगोपाल शर्मा "दिनेश" के "पृथ्वीराज" नाटक का अनुशीलन "

१) हिन्दी नाटकों की, विशेषकर ऐतिहासिक नाटकों की विकासात्मक रूपरेखा।

२) डॉ. रामगोपाल शर्मा "दिनेश" : व्यक्तित्व और कृतित्व।

३) पृथ्वीराज नाटक :

अ) पृथ्वीराज: नाटक की ऐतिहासिकता।
आ) शिल्प की दृष्टि से नाटक का विवेचन।
इ) पात्रों का चरित्र चित्रण।
ई) नाटक का उद्देश्य।
उ) नाटक की कथावस्तु: आधुनिक परिप्रेक्ष्यमें।
ऊ) नाटक के गीत।
ए) रंगमंच की दृष्टि से "पृथ्वीराज" नाटक।
(पृथ्वीराज नाटक की रंगमंचीयता)

४) उपसंहार।

निर्देशक
डॉ. व्ही॰ व्ही. द्रविड
एम. ए॰, पी.एच्.डी.,

शोधछात्र
प्रा॰ बलवंत भूपाल खोत
एम. ए., पंडित,
साहित्य सुधाकर.

" अनुक्रमणिका "

अ. नं.	अध्याय का नाम		पृष्ट नंबर
प्रथम	हिन्दी नाटकों की, विशेषकर ऐतिहासिक नाटकों की विकासात्मक रूपरेखा –	...	८
व्दितीय	डॉ. रामगोपाल शर्मा "दिनेश": व्यक्तित्व और कृतित्व	...	२६
तृतीय	पृथ्वीराज नाटक :	...	४१
	अ) पृथ्वीराज : नाटक की ऐतिहासिकता–	...	४९
	आ) शिल्प की दृष्टि से नाटक का विवेचन –	...	५४
	इ) पात्रों का चरित्र चित्रण–	...	७४
	ई) नाटक का उद्देश्य–	...	९५
	उ) नाटक की कथावस्तु : आधुनिक परिप्रेक्ष्यमें–	...	१०२
	ऊ) नाटक के गीत –	...	१०८
	ए) रंगमंच की दृष्टि से पृथ्वीराज नाटक–	...	११४
चौथा	उपसंहार –	...	१२०
	संदर्भ ग्रंथ सूची–	...	१२३